सेवा

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुर सेवा कर गुरसिख कहावे। सेवा सिख नूं माण दुआवे। सेवक जो सेवा करे। सुक्के काष्ट प्रभ करे हरे। बच्चयां दा प्रभ देवे दान। सच्चा सतिगुर जाणी जाण। (१८ मध्घर २००६ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुर चरनां विच्च सद सेव कमाईए। गुर चरनां विच्च सद भुल्ल बख्शाईए। गुर चरनां विच्च देह रोग गवाईए। गुर चरनां विच्च नाम पदार्थ पाईए। गुर चरनां विच्च रसना हरि जस गाईए। गुर चरनां विच्च भगती हीण तराईए। गुर चरनां विच्च मन दी तपत बुझाईए। गुर चरनां विच्च आत्म शांत कराईए। गुर चरनां विच्च सुफल जन्म कराईए। गुर चरनां विच्च आपणा आप लगाईए। गुर चरनां विच्च सहिँसा रोग गवाईए। गुर चरनां विच्च संगत दी सेव कमाईए। गुर चरनां विच्च सिर छत्तर झुलाईए। गुर चरनां विच्च दालद दलिद्दर गवाईए। गुर चरनां विच्च दोए जोड़ सीस झुकाईए। गुर चरनां विच्च मस्तक धूढ़ लगाईए। गुर चरनां विच्च सर्ब सुख फल्ल पाईए। गुर चरनां विच्च सन्तन दी कार कमाईए। गुर सेवा विच्च सदा चित लाईए। गुर सेवा विच्च प्रभ रिदे ध्याईए। गुर सेवा विच्च सोहँ शब्द गुण गाईए। गुर सेवा विच्च प्रभ दर्शन पाईए। गुर सेवा विच्च लोभ हँकार गवाईए। गुर सेवा विच्च जगत विकार तजाईए।

गुर सेवा विच्च संगत धूढ़ हो जाईए। गुर सेवा विच्च सीतल चन्न समाईए। गुर सेवा विच्च पारब्रह्म पाईए। गुर सेवा विच्च गुर चरनीं चित लाईए। गुर सेवा विच्च महाराज शेर सिँघ संग समाईए। (१५ वसाख २००७ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

घर तोट कदे ना आवई, गुर सेवा गुरसिख कमाया। फिर जन्म कदी ना पावई, अन्त काल विच्च जोत मिलाया। सति पुरखा सच नाम जपावई, घर साचा धाम सचखण्ड बणाया। प्रभ देन्दयां तोट ना आवई, जगत भण्डारी प्रभ तेज वधाया। प्रभ सद सद बख्शणहार, मंग दान घर परमेश्वर आया। जगत देवे माण, सोहण मन्दर जिथ्थे प्रभ चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ जाओ बलिहार, जिस एह थान सुहाया।
(५ चेत २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुर सेवा सिख देवे फल। अन्त काल घर आवे चल। जीव प्रभ जोत संग जावे रल। साचा घर जिथ्थे प्रभ वस्सया, गुरसिखा घर साचा मल। कलिजुग आए राह सच दस्सया, प्रभ कीना ना वल ना छल। बेमुख दरों क्यों नस्सया, कलिजुग जिन्नां हिरदे सोहँ वस्सया, देवे दरस आप अट्टल। प्रभ आपणी जोत प्रगटा के, देर लावे घड़ी ना पल। (६ चेत २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुर सेवा गुरमुख कमाए। गुर सेवा सोहँ शब्द कमला पाए। गुर वड्डा देवी देवा, सच हिरदे जोत जगाए। प्रभ प्रगटे अलख अभेवा, निहकलंक नाउँ रखाए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग तेरी सेवा, गुरसिख ना बिरथी जाए। गुरसिख सेवा चरन कर, प्रभ दर मंगे। गुरसिख साचा प्रण कर, प्रभ सोहँ मन रंगे। गुरसिख सच गुर सरन कर, कलिजुग जीव वेख ना संगे। गुरसिख कलिजुग तरनहार, मिले दान मुख जो मंगे। महाराज शेर सिँघ साचा कलिजुग तारे भुक्खे नंगे । (१५ चेत २००८ बि)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुर दर्शन लोचे सभ देवी देवा। प्रभ जोत सरूप अलख अभेवा। प्रभ का दर्शन कलिजुग उत्तम मेवा। गुर चरन जीव साची गुर सेवा। महाराज शेर सिँघ छड्ड जोत जीव विच्च आप वसेवा। (२५ चेत २००८ बि)

साचा प्रभ सर्ब सुखदेवा। साचा प्रभ साची प्रभ सेवा। धरे जोत प्रभ अलख अभेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा मेवा। (२२ माघ २००८ बि)

गुर सेवा कारज रासे। प्रभ अबिनाशी हिरदे रक्खे वासे। दूती दुष्ट दर तों नासे। कोहड़ी कुश्टी प्रभ रक्खण चरन भरवासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभना दुःखड़े आप विनासे। प्रभ अबिनाशी साचा घर। गुरमुख साचा जाए तर। साचा प्रभ देवे साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अवतार नर।

(६ जेठ २००६ बि)

गुर सेवा गुर पूरा पाईए। गुरमुख होए गुर सेव कमाईए। गुर सेवा घर साचे जाईए। प्रभ अबिनाशी चरन विगसाईए। गुर सेवा हरि मन्दर पाईए। प्रभ की जोत अंदर जगाईए। गुर सेवा जन्म मरन गेड़ कटाईए। दरगाह साची थां दवाईए। गुर सेवा अन्त अन्तकाल कर कलिजुग तर जाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीत कमाईए। (८ जेठ २००६ बि)

. . . . . जिस जन हरि संगत सेवा हरि चरन प्रीती लई घाल, ना मरे ना जाईआ। सतिगुर पूरा आपे चले नाल नाल, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार ठग्ग लुट्ट कोई ना जाईआ। गुरसिख सच्चा ना शाह कंगाल, गुर चरनां ओट रखाईआ। करनहार सदा प्रितपाल, हरि सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा देवे वर, दर दवारा एका एक सुहाईआ। (७-४२६)

साची सेव करे करतार, नज़र किसे ना आईआ। पंज तत्त लेखा रहे अंदर चार दीवार, तन माटी नाल मिलाईआ। अन्तर अन्तर करे विहार, बण बिवहारी सेव कमाईआ। यारां नाल बणया यार, सत्थर यारड़ा आप हंढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

खेले खेल अपर अपारा, अपरम्पर धार चलाइंदा। गोबिन्द उठाया सुत दुलारा, साचा संग निभाइंदा। जन भगतां नाल करे प्यारा, आप आपणा बंधन पाइंदा। आपे चुक्के इट्टां गारा, गुरसिख अंदर वड़ वड़ सेव कमाइंदा। जो गुरसिख आए चल दुआरा, तिस आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा।

सेवा करे हरि जू हरि, दिस किसे ना आईआ। गुरसिखां अंदर बैठा वड़, दिवस रैण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेव आप समझाईआ।

गुरसिख सेवा करे दुआर, हरि जू अन्तर आसण लाया। जे कोई कहीआं देवे मार, पुरख अबिनाशी बल धराया। जे कोई तगारी चुक्के सीस बन्न दस्तार, सिर उपर आपणा हत्थ टिकाया। जे कोई पौड़ी डण्डा चढ़े वारो वार, आपणा डण्डा दए फड़ाया। जे कोई कांडी तेसी दए मार, तिस आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अंदर वड़ वड़ सेव कमाया।

अंदर वड़ हरि रघुनाथ, आपणी दया कमाईआ। बिन डिठिआं देवे साथ, साचा संग निभाईआ। लहणा चुक्के हाथो हाथ, हत्थो हत्थी दए चुकाईआ। जिहनूं पुच्छो सोई कहे वसे मेरे पास, रातीं सुत्यां मेरे कोल फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरा सच्चा भोग बिलास, गुरमुख आत्म सेज हंढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेव कमाईआ।

जे कोई फड़े तेसा आरी रंदा, एका रंदा हत्थ रखवाईआ। गुरसिख बणाए आपणा बन्दा, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। दर दुआरे कोई ना रहे गंदा, गंदी वाशना दए मिटाईआ। हरि भगत चढ़े साचा चन्दा, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। करे प्रकाश विच्च ब्रह्मण्डा, वरभंड मिले वडयाईआ। करे खेल सूरा सरबंगा, सूरबीर शहनशाहीआ। जिस दुआरे निशान झुल्ले सत्त रंगा, तिस सति पुरख निरञ्जण लए मिलाईआ। गुरमुख गाओ सदा सुहागी छन्दा, प्रभ मिल्या इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप वखाईआ।

जे कोई फड़े तेसी सत्थर, सत्थरा हत्थ उठाया। कर किरपा मेले मन पत्थर,

मन का मणका आप भवाया। गुरसिख तेरी सेवा वेख पुरख अबिनाशी आपणे नीर वहावे अत्थर, नैण नैण नैण भराया। जिस विछाया यारड़ा सत्थर, सो बण बण यार सेव कमाया। भगत दुआरा ना होए भट्ठड़, भट्ठ खेड़ा ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे नाल मिलाया।

हरिजन साचे गए मिल, मिल्या एकँकार। चौदां लोक गए हिल, चौदां तबक होए ख़बरदार। कवण दर प्रभ लाए सिल, भगत दुआरा कर त्यार। जिस नूं कहन्दे बसन बनवारी कपड़े पहरे नील, रूप अनूप आप धराया। तिस अग्गे करो अपील, जे देवे दया कमाया। वड ख़ालक ख़लक ख़लील, बेख़बर लए जगाया। जोधा सूरबीर छैल छबील, छहबर आपणे नूर दरसाया। लोकमात बणाए सच फ़सील, भगत दुआरा नाउँ रखवाया। चार जुग दी कट्ठी करे दलील, गुर अवतार जो गए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क वड्डिआया। (११-१८, १६)

साची सिख्या गुरमुख सिखो, गुर सतिगुर आप समझाया। पारब्रह्म प्रभ नेत्र पेखो, जिस डिठिआं दुःख रहे ना राया। निराकार निरवैर धरया भेखो, भेखधारी रूप वटाया। जट्ट बण बण फिरे विच्च खेतो, जगत खेती वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाया।

साची सिख्या करो विचार, गुरसिख सिख समझाईआ। पिछला लेखा देवे पाड़, जो चल आए सरनाईआ। अग्गों मिले गोबिन्द यार, प्रेम प्यार निभाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी गोद लए उठाल, साची सेव कमाईआ। आप पुच्छे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा रूप धराईआ। गुरसिख नेड़ ना आए काल, जो ढह पया सरनाईआ। भगत दुआरा बणे सची धर्मसाल, चार वरन सीस झुकाईआ। जिस अंदर बहे दीन दयाल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नाल रलाए गुरमुख साचे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, भल देवे नाम वडयाईआ। साचा मार्ग दित्ता वखाल, बण पान्धी भुल्ल ना जाईआ। गुरसिख घालण लैणी घाल, घाली घाल ना बिरथा जाईआ। साहिब सतिगुर वसे नाल नाल, दिवस रैण वेख वखाईआ। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। आओ लुटो सच्चा धन्न माल, पुरख अबिनाशी रिहा लुटाईआ। सचे शाह बणो कंगाल, घर साची वस्त टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम रिहा वरताईआ।

गुरसिख अग्गों करे सवाल, की कुछ रिहा वरताईआ। असीं भुक्खे नंगे बुरा हाल, लोकमात रहे कुरलाईआ। खाण नूं लभ्भे रोटी दाल, दूसर वस्त ना कोई ध्याईआ। चारों

कुण्ट जगत जंजाल, दिवस रैण लड़ाईआ। माया ममता कीता बेहाल, सुरती सुरत भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वस्त रिहा वरताईआ।

कवण वस्त तेरे कोल, गुरमुख पुच्छ पुछाइंदा। कवण दुआरा देवें खोलू, आपणा घर वखाइंदा। कवण रूप जाएं मौल, मौला नाम प्रगटाइंदा। कवण वेला पूरा करें कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सुणाइंदा।

साची वस्त अगम्मी दात, हरि आपणे हत्थ रखवाइंदा। जिस अमृत पिआए बूंद स्वांत, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखवाइंदा। जिस दरस दिखाए इक्क इकांत, आप आपणा मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्तम इक्को बन्नांिचरन नात, नाता फेर ना कोई तुड़ाइंदा। गोबिन्द पूरा करां भविख्त वाक, भाखिआ होर ना कोई समझाइंदा। आपणी करनी देवे साथ, करता साची किरत कमाइंदा। गुरसिख इक्को दस्सां पूजा पाठ, जिस दा भेव कोई ना पाइंदा। सोहँ गौणी साची गाथ, जगत गाथा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। (११-२०)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुरसिख फिरन ज़ोरो ज़ोरी, आपणा ज़ोर वखाईआ। सिर ते चुक्कण सीमेन्ट बोरी, फिरन वाहो दाहीआ। फिर वी कहण अजे थोड़ी, मन सांत ना आईआ। भज्जो नट्ठो करन बौहड़ी बौहड़ी, वेला गिआ हत्थ ना आईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरदे विच्च राग गौड़ी, सो गौड़ आपणा रूप वटाईआ। जिस नूं गौंदा वार पढ़ पढ़ पौड़ी, सो पौड़ा रिहा लगाईआ। लक्ख चुरासी कोलों करे चोरी, बण बण चोर वेख वखाईआ। अनडिठी बध्धी गुरसिखां अंदर डोरी, अठ्ठे पहर हिलाईआ। आपणे नाल जाए तोरी, तुरत आपणा पन्ध मुकाईआ। कोई ना वेखे रैण अन्धेर घोरी, सारे कहण सतिगुर करी रुशनाईआ। अल्ला राणी बांकी छोहरी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। की करां प्रभ आपणा खेल करे हौली हौली, हवालात रिहा बणाईआ। जिस आपणी पैहलों बदली चोली, गुरमुखां चोला दए बदलाईआ। मैं डरदी फिरदी मैनूं कर ना देवे गोली, आपणे भगतां दर बहाईआ। मैं आपणी घुंडी किसे कोल ना खोलू, ना दस्सां किसे सुणाईआ। चौदां सदीआं जिस खेली होली, तिस दे हौके रही भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा वेख वखाईआ। (११-२१, २२)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

गुर अवतार पीर पैगम्बर छुट्टया साथ, सगला संग तजाया । राम कृष्न तज्जया त्रिलोकी नाथ, निरगुण खेल खलाया। रव सस भुल्लया दिवस रात, चन्द चांदनी मुख छुपाया। लेखा चुक्कया पूजा पाठ, पढ़ पढ़ धीर ना कोई धराया। पुरख अबिनाश खेल तमाश, लोकमात आप कराया। वेस वटा पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल रिहा सुहाया । कलिजुग अन्तम सभ कोलों हो उदास, भगतां दुआरे फेरे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहिआ।

बेपरवाह खेल खला, वेखे चाईं चाईंआ। रातीं सुत्यां गुरसिख लए जगा, जुगती आपणे हत्थ वखाईआ। आपणी प्रेम रत्त नाल दए नुहा, जगत नीर ना कोई रखाईआ। कर कर सेवा चढ़या साह, दिवस रैण सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी कोई वेखे ना, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा खेड़ा आपे गिआ ढाह, गुरमुखां खेड़ा रिहा बणाईआ। एसे कारन सिँघ पूरन लिआ परना, पूरन परमेश्वर विच्च समाईआ। पुत्तर धीआं नाता लिआ तुड़ा, जगत मोह ना लिआ वधाईआ। गुरमुखां फड़ फड़ बांह, आपणे अग्गे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाईआ।

सेवा करन दा इक्को मौका, छत्ती दिन जणाया। बिन भगती तरना सौखा, मार्ग इक्क लगाया। गुरसिख जे इस नूं जाणे औखा, औखा घाट नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा वेख वखाया।

सेवा करन दा साचा वक्त, छत्ती दिन वंड वंडाईआ। पाल सिँघ फसिआ मोह जगत, जुगत गिआ भुलाईआ। प्रभ लेखे लाई रक्त, पूरब लहणा झोली पाईआ। आप सुहाया उस दा वक्त, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त होए सहाईआ।

पाल सिँघ दी कर प्रितपाल, आपणी दया कमाइंदा। रातीं सुत्यां दए नुहाल, दुरमत मैल धवाइंदा। माया झूठी जगत जंजाल, जीव जंत कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छत्ती दिवस दा साचा फल, गुरसिखां झोली पाइंदा।

सेवा करे जो आ दुआर, जुग छत्ती मिले वडयाईआ। पुरख अबिनाशी बणया रहे मित्र यार, यारड़ा सत्थर आप हंढ़ाईआ। गुरसिख भुल्ले जो विच्च संसार, मूर्ख मुगध रूप वटाईआ। तिस करे आप प्रितपाल, होए संग सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंग बणाईआ। (११-१२५ २१ मध्घर २०१८)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सच प्रीत हरि की सेवा, सेवा सच विच्च समाईआ। सच प्रीत अमृत मेवा, अंमिउँ रस रस चखाईआ। सच प्रीत वड देवी देवा, देवत सुर आप समझाईआ। सच प्रीत रसना जिह्वा, हरि हरि नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाईआ।

सच प्रीत रक्खी आदि, आदत आपणी इक्को पाईआ। सच प्रीत अंदर हो विस्माद, विस्मादी आपणी कार कमाईआ। सच प्रीत प्रेमी नाद, अनादी राग सुणाईआ। सच प्रीती सच्चा साक, सज्जण सैण रूप वटाईआ। सच प्रीती खोल्हे ताक, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। सच प्रीती साचे हाट, सो पुरख निरञ्जण आप रखवाईआ। सच प्रीती साची दात, हरि शब्दी आप वरताईआ। सच प्रीती दे दे गाथ, नाम निधान करे पढ़ाईआ। सच प्रीती निभावे साथ, अंगीकार आप हो जाईआ। सच प्रीती पाए रास, मण्डल मंडप गोपी काहन नचाईआ। सच प्रीती भाग लगाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच्च परभास, टिल्ले पर्बत खुशी मनाईआ। सच प्रीती सभ दी पूरी करे आस, निरासा कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती इक्को इक्क जणाईआ।

सच प्रीती दस्सी इक्क, एकँकार दया कमाईआ। सच प्रीती बख्शी हित, हितकारी हो सहाईआ। सच प्रीती रहे नित नवित्त, आपणे बंधन पाईआ। सच प्रीती साची सिख, सिख्या इक्क समझाईआ। सच प्रीती आपे लिख, वेखणहार आप हो जाईआ। सच प्रीती पाए भिख, भिच्छया आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। (१४-७०६)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

कलम शाही दवात दा ब्यान :

. . . . . साचे भगतां लेख लिखावांगी । तेरे नाम नाल मिलावांगी। हड्ड मास नाड़ी चाम प्रेम रंग इक्क चढ़ावांगी। नाता तोड़ लोभ मोह हँकार, क्रोध काम मेट मिटावांगी। गुरमुख कोई ना करे आराम, हरफ़ इक्को इक्क समझावांगी। दर दरवेश बण गुलाम, घर घर अलख जगावांगी। साचा मेला श्री भगवान, दूजा नाता तोड़ तुड़ावांगी। कलिजुग अन्तम लिख के इक्को ज्ञान, चौदां विद्या पन्ध मुकावांगी। तूं मेरा मैं तेरे दर होई परवान, घर इक्को इक्क वखावांगी । साचा झुलदा रहे निशान, निशाना इक्को इक्क चढ़ावांगी। लोकमात गुरमुख बण के आए महिमान, तिन्नां दा सिफ्ती राग अलावांगी। जिस वेले मुड़ के घर नूं जाण, कर कर सेवा लिख लिख लेखा अगला धाम साफ़

करावांगी। चार जुग मैं बणी रही नादान, अन्तम आपणी अक्ख खुल्हावांगी। जिन्हां मैनूं कीता परवान, तिन्हां परवाना लिख के हत्थ फड़ावांगी। आदि जुगादि किसे ना मिल्या विष्नूं भगवान, जुग विछड़यां काग़ज़ उत्ते फड़ मिलावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां संग निभावांगी। (१५-२०७)

★ १४ माघ २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह बाबूपुर" ★

सेवा कहे मेरे परबीन, बेनज़ीर तेरी सरनाईआ। मैं निरधन हो मस्कीन, दर ठांडे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी रही अद्धीन, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। तेरा वेख खेल यामबीन, मेहरवान भेव कोई ना आईआ। मैं वेख थक्की लोक तीन, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर तड़फां जिउँ जल मीन, बिलप चातरक वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

सेवा कहे मैं जगत निमाणी, हस्ती नज़र कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी भरदी रही पाणी, पीसण पीस सेव कमाईआ। बणी रही बाल अञाणी, बल बुद्ध ना कोई रखाईआ। फिर फिर वेखदी रही चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल मेरे मेहरवान मैनूं किसे ना बणाया धुर दी राणी, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। मैं कोझी कमली मात पछताणी, पसचाताप विच्च वक्त लँघाईआ। सच दवारे देवे ना कोई माणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

सेवा कहे मैं होछी मत, मात चले ना कोई चतुराईआ। साचा करे ना कोई साथ, संगी संग ना कोई निभाईआ। नेत्र उठा वेखे ना कोई अक्ख, नैनण नैण नैण शरमाईआ। मेरा किसे ना दित्ता हक़, हकीकत झोली कोई ना पाईआ। दरोही खुदाए गई थक्क, थकावट मेरी ना कोई मिटाईआ। फिर फिर वेख्या जगत हट्ट, घर घर आपणी अलख जगाईआ। मेरी कोई ना रक्खे पत्त, धीरज धीर ना कोई धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान तेरी वडयाईआ।

सेवा कहे मैं बाली नढ्ढी, बचपन विच्च दिआं दुहाईआ। शाह सुल्तानां घरों कढ्ढी, जगत जहान ना कोई ढोईआ। मेरा दुखी अंग अंग करे हड्डी, तत्त तत्त रिहा कुरलाईआ। मेरी धार किसे ना बध्धी, रीत मात ना कोई जणाईआ। बीते काल कोट सदी, सिर सदका ना कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दे माण वडयाईआ।

सेवा कहे मैं निक्की बाली, सोच समझ ना कोई रखाईआ। जुग चौकड़ी घाल घाली, नित नवित्त कार कमाईआ। जिस वेले वेखां हत्थ दोवें ख़ाली, वस्तू नज़र कोई

ना आईआ। नानक निरगुण दस्स के गिआ दलाली, साची सिख्या इक्क समझाईआ। अञ्जण किहा बेमिसाली, मिसल सभ दी दए बणाईआ । अमरदास किहा धुर दा माली, मालक इक्को बेपरवाहीआ। रामदास बोल किहा साहिब सतिगुर दीन दयाली, दयावान वड्डी वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वडयाईआ।

सेवा कहे मैं जगत निमाणी, निरधन आपणा नाउँ रखवाईआ। चार जुग मेरी करे ना कोई पहचानी, मन्दर घर ना कोई वसाईआ। प्रेमी मिले ना कोई हाणी, ओढुण सीस ना कोई टिकाईआ। सची देवे ना कोई निशानी, निशाना हत्थ ना कोई फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ।

सेवा कहे मैं घोल घोली, सीस जगदीस निवाईआ। जुग चौकड़ी कदे ना बोली, चुप्प चुपीती कार कमाईआ। कलिजुग अन्तम अन्तर हिरदे मैं वी डोली, धीरज नज़र कोई ना आईआ। चारों कुण्ट वेख्या पैंदी रौली, होका देवे जगत लोकाईआ। जन भगत कहण श्री भगवान हत्थ लै के मैंहदी मौली, तन्द सगन नाम बंधाईआ। सच दरगाह जिस ने खोली, देवे सर्ब माण वडयाईआ। मैं वी चल के आई हौली हौली, पिछला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्क वर, वर दाते दर तेरे मंग मंगाईआ।

सेवा कहे मैं आई चल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पर्बत चोटी टिल्ले रहे हल्ल, जंगल जूह ध्यान लगाईआ। शाही लश्कर वेखण दल, फ़ौजदार नैण उठाईआ। मैं सभना कर के वल छल, ओझल हो के मुख छुपाईआ। किरपा कर मेरे भगवन, साहिब तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी दए जणाईआ।

सेवा कहे मैनूं आया दुःख, दुःखा इक्को नज़री आईआ। मेरे प्रेमीआं सदा रहे भुक्ख, कंगला रूप वटाईआ। मैं ओनां मंगाँ सुख, दर तेरे कर अरज़ोईआ। तेरी दो जहान लुट्ट, मैं मुहताज झोली डाहीआ। किरपा कर प्रभ तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया दे वरताईआ।

सेवा कहे मैं कोझी कमली, मूर्ख मत रही कुरलाईआ। बिरहों विछोड़े कीती बवली, सुरती सुरत भवाईआ। मिले माण ना उपर धवली, धरनी धरत ना कोई सहाईआ। ख़ाली वेख मेरी बग़ली, भिच्छया नज़र कोई ना आईआ। की हालत दस्सां साहिब अगली, बल रहण कोई ना पाईआ। मैं वेख के ख़ुश इक्को होई तूं भगतां सीस बध्धी पगढ़ी, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। ओनां पिच्छे मैं हो के आई तकड़ी, बल आपणा नाल मिलाईआ। बिन तेरी किरपा टंगों होई लंगढ़ी, भज्ज सकां ना वाहो दाहीआ।

कूड़ी क्रिया मैनूं रही जकड़ी, कदम सकां ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मैं वेख के आई ब्रह्मण शत्तरी, शूद्र वैश दर दर फेरा पाईआ।

सेवा कहे मैं होई नालायक, मोहे मिले ना कोई वडयाईआ। आदि जुगादि मैं सभ दे रही मातहित, हुक्मे अंदर फेरा पाईआ। मैनूं करे ना कोई रयाइत, झोली दर ना कोई भराईआ। सारे करदे रहण हदाइत, आपणा ज़ोर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दे इक्क वर, साहिब सतिगुर दीन दयाल दया कमाईआ।

सेवा कहे मेरा कोई ना मुल्ल, कीमत करते ना कोई पाइंदा। कोझी कमली जे गई भुल्ल, भुल्लयां राह नज़र ना आइंदा। तेरे चरनां अंदर जावां रुल, दूजा गृह ना कोई भाइंदा। तेरी रहमत सदा अनमुल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, साहिब सभ तेरी आस रखाइंदा।

सेवा कहे मैं होई मज़बूर, मुशकल हल्ल ना कोई कराईआ। चारों कुण्ट भरया ग़रूर, गुरबत विच्च फिरे लोकाईआ। त्रैगुण माया तपे तन्दूर, अगनी अग्ग ना कोई बुझाईआ। साहिब सतिगुर मेरा कर मुआफ़ कसूर, दोए दोए जोड़ लागाँ पाईआ। मेरी आसा मनसा पूर, संसा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे वखाईआ।

सेवा कहे वेख मेरा हाल, पर्दा उहला आप चुकाईआ। अठ्ठे पहर होई बेहाल, सुरती सुरत ना कोई वडयाईआ। मेरी चोली होई कंगाल, झोली सके ना कोई भराईआ। साचा मिले ना कोई दलाल, विचोला संग ना कोई निभाईआ। मैं जुग चौकड़ी थक्की भाल, दह दिशा फेरा पाईआ। मेरा हल्ल ना होया सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब आपणे नाल मिलाईआ।

सेवा कहे मैं होई छोटी, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। मैनूं लभ्भदे गए कोटन कोटी, कोटन कोटां विच्चों ध्यान लगाईआ। मैं डूंघे अंदर वड़ के रही सोती, सुत्यां सके ना कोई जगाईआ। जुग चौकड़ी रही रोती, रुस्सयां सके ना कोई मनाईआ। प्रेम प्यार दे हन्झआं वहौंदी रही मोती, छहबर धार इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दे साचे घर, देवणहार तेरे हत्थ वडयाईआ।

सेवा कहे प्रभ हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। किरपा सिंध दे दान, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। गुणी गहिंद कर परवान, दर बेनन्ती इक्क जणाईआ। सद बख्शंद वेख आण, निरवैर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहणा लैणा झोली पाईआ।

सेवा कहे मेरा देदे लहणा, दर तेरे मंगण आईआ। इक्को वार तैनूं कहणा, सीस सजदा इक्को वार झुकाईआ। चार जुग फेर चुप्प करके रहणा, रसना बोल ना कोई अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देदे धुर दा वर, धुर मस्तक रेख मिटाईआ।

सेवा कहे मेरा देदे लेखा, लेखा लिख्त तेरे हत्थ वडयाईआ। क्यों साहिब सतिगुर मेरा भुलया चेता, ग़फ्लत विच्च वक्त लँघाईआ। तूं साहिब स्वामी सभ दा नेता, नर नरायण नज़री आईआ। निरवैर निरँकार बणे खेवट खेटा, बेड़े आपणे लए चढ़ाईआ। जिवें भगत दवारे बणाए आपणा बेटा, पिता पुरख अकाल नाउँ धराईआ। मैं वी उह रंग वेखां, जो अनडिठड़ा दएं रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वडयाईआ।

दे वड्डिआई साहिब सतिगुर, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। मैं दूर दुराडी आई तुर, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। तूं साहिब स्वामी लेखा जाणे धुर, जुग चौकड़ी तेरी सरनाईआ। दर दवारे दोए हत्थ रही जोड़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बौहड़ी बौहड़ी रही कुरला तूं बौहड़, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। मैं निमाणी वल वेख कर के ग़ौर, गहर गम्भीर अक्ख खुल्ह़ाईआ। सच सच दर तेरे पावां शोर, शोरश अवर ना कोई मचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, मेरा लेखा दे लिखवाईआ।

तेरा लेखा लिखणा की, साहिब सतिगुर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी तेरी रक्खी नींह, साची सेवा इक्क समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बीज्या बी, अन्तम आपे वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां विच्चों साढ़े तिन्न हत्थ तेरी लेखे लग्गी सीं, सीमा आपणी आप समझाइंदा। जिस दवारे जन भगत रहे जी, हरि जीवत मुक्त कराइंदा। ओसे गृह खुशीआं नाल थी, सच कहाणी आप दृढ़ाइंदा। श्री भगवान बरसे अमृत मींह, मेघला इक्को धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप समझाइंदा।

साची सेवा कर समझ, हरि इक्को वार समझाईआ। श्री भगवान मार रमज़, इशारे नाल लिआ उठाईआ। मेहरवान हो के मरदाना मरद, सच मरदानगी इक्क कमाईआ। तेरे नाल वंडी दर्द, दीना नाथा होए सहाईआ। खोल्ह़ वखाए पिछली फ़रद, लहणा देणा भेव मिटाईआ। तेरी गोबिन्द पूरी करे अर्ज़, आरज़ू ख़ाहश नाल मिलाईआ। तूं आपणा पूरा कर लै फ़र्ज़, सेव सच सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

सुण सेवा बाली नढ्ढी बच्ची, श्री भगवान आप समझाइंदा। जुग चौकड़ी

तेरी रुत्त रही कच्ची, साचा फल ना कोई लगाइंदा। चारों कुण्ट वगदी रही वा तत्ती, सांतक सति ना कोई कराइंदा। तेरा खेल किसे ना वेख्या आ के अक्खीं, नेत्र नैण ना कोई खुलायंदा। सारे रसना जिह्वा तैनूं कहन्दे रहे अच्छी, अच्छी तरां तेरा भेव कोई ना पाइंदा। तूं तड़फदी रहीउँ जल विछोड़े वांग मच्छी, तेरी मुशकल हल्ल ना कोई कराइंदा। साहिब सतिगुर पत तेरी रक्खी, मेहरवान सिर साचा हत्थ टिकाइंदा। सच कहाणी अगली दस्सीं, श्री भगवान पुछ पुछाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

सच कहाणी पुच्छे करतार, हरि करता आप जणाईआ। साची सेवा दस्स ख़िदमतगार, की की कार कमाईआ। केहड़ा वणज कवण वपार, कवण हट्ट चलाईआ। कवण शहर कवण बज़ार, कवण वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच कहाणी पुच्छ इक्को हुक्म जणाईआ।

सेवा कहे सच दस्सां भगवान, झूठ नज़र कोई ना आईआ । बण के बाली नढ्ढी नाधान, सद साची सेव कमाईआ। मैनूं सभ तों चंगी लग्गी तेरी शान, दूजा नज़र कोई ना आईआ। सभ तों चंगा लग्गा तेरा पुत्त बलवान, गोबिन्द सूरा बेपरवाहीआ। मैं ओस नाल कीता प्यार, सच सच दिआं दृढ़ाईआ। खुशी विच्च आ के बच्चे नींहां हेठ दब्बे निशान, निशाना तेरे नाल मिलाईआ। सच संदेशा दे विच्च जहान, उच्ची कूक दित्ता सुणाईआ। साची सेवा बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे परवान, लेखे लेख ना कोई लगाईआ। सुण अवाज़ गोबिन्द किहा सुण नादान, क्यों बैठी माण वधाईआ। मेरा लेखा अजे ना मुक्कया विच्च जहान, भुलेखा सभ दा दूर कराईआ। निरगुण हो के आवे पुरख अकाल, जोती जाता वेस वटाईआ। मैं आवां उस दे नाल, शब्दी कार कमाईआ। करां खेल इक्क महान, साची धुर दी बणत बणाईआ। ओस वेले आवीं चल अंजाण, बाली आपणा रूप वटाईआ। फेर देवां इक्क फ़रमान, सच संदेश सुणाईआ। जिन्हां नीहां हेठ निशान, तिन्हां देवां माण वडयाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ मन्दर बणे महान, माणस मानुख लेखे सारे लाईआ। नौं दर खोल्ह सच निशान, दर दरवाजा आप दृढ़ाईआ। भगत दवारा कर प्रधान, भगवन तेरी सेवा इक्क वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे वेखण आण, नेत्र नैणां दर्शन पाईआ। गीत खुशीआं सारे गाण, ढोला इक्को राग अलाईआ। सदी बीसवीं तेरा लेखा होए परवान, बीस बीसा दए जणाईआ। जन भगतां दे के धुर दा दान, सीस जगदीश पगढ़ी नाम बंधाईआ। फिर तैनूं नाल लै के जाए भगत दवार भगवान, आपणा संग रखाईआ। दर दर घर घर घर घर दर दर गुरमुखां तैनूं दए वखाल, शब्द इशारे नाल जणाईआ। तूं खुशीआं नाल वेखीं आण, नेत्र अक्खवां दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा हौली हौली तेरी झोली देवे पाईआ।

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ १४ माघ २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बाबूपुर" ★

श्री भगवान कहे सुण सेवा बच्ची, धुर दा लेख समझाईआ । तेरी कहाणी लग्गी सच्ची, साहिब सतिगुर भाईआ। तेरी प्रीत धुर दी लग्गी, ना सके कोई मिटाईआ। श्री भगवान रीती साची दस्सी, बेपरवाह दया कमाईआ। करया खेल पुरख समरथी, शहनशाह होए सहाईआ। मैं वखावां तैनूं अक्खीं, जो दर आया सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पर्दा रिहा उठाईआ।

साची सेवा सर्ब कमौंदा ए। सो पुरख निरञ्जण भेव चुकौंदा ए। हरि पुरख निरञ्जण पर्दा लहुदा ए। एकँकार आप वखौंदा ए। आदि निरञ्जण भेव मिटौंदा ए। अबिनाशी करता रंग रंगौंदा ए। श्री भगवान संग निभौंदा ए । पारब्रह्म सेवा अंदर आपणी कार आप लगौंदा ए । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क द्रिड़ौंदा ए।

सेवा अंदर सेव कमौंदे ने। विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवौंदे ने। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ मंग मंगौंदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप समझौंदा ए।

साची करनी इक्क दृढ़ावांगा। धुर दी रीती आप समझावांगा। सचखण्ड दवार इक्क वखावांगा। घर दीपक जोत रुशनावांगा। धुर दी अगम्मी बणत बणावांगा। नार कन्त रूप वटावांगा। गृह मन्दर सोभा पावांगा। थिर घर दवार इक्क उपजावांगा। बण जननी जन सुत प्रगटावांगा। सच दवार सुहा रुत्त, फल फुलवाड़ी आप महकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आपणे हत्थ रखावांगा।

साची सेवा आपणे हत्थ रखावांगा। शब्दी सुत इक्क प्रगटावांगा। धुर दा हुक्म इक्क अलावांगा। साची रचना रचना विच्चों प्रगटावांगा। विष्नूं विश्व धार चलावांगा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप धरावांगा। शंकर धूआंधार प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सेवा इक्क लगावांगा।

साची सेवा सर्ब कमौणगे। श्री भगवान दवारे सीस निवौणगे। बण दरवेश मंग मंगौणगे। ख़ाली झोली अग्गे डौहणगे। दोए जोड़ वास्ता पौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची कारे लग्ग लग्ग खुशी मनौणगे।

साची कारे आप लगावांगा। विष्नूं हत्थ भंडार फड़ावांगा। साची सेवा इक्क समझावांगा। घर घर रोज़ी रिज़क पुचावांगा। साचा इशक आपणे नाल रखावांगा। स्वामी इष्ट रूप हो नज़री आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी खेल करावांगा।

ब्रह्मे सेवा सच समझावांगा। ब्रह्म इक्को नूर प्रगटावांगा। ज़ाहर ज़हूर खेल खलावांगा। शब्दी नाद तूर वजावांगा। आसा मनसा पूर, तृसना तृखा मिटावांगा। हो के हाज़र हज़ूर, हरि मन्दर इक्क वखावांगा। जिस गृह नज़री आए जोती नूर, सच उजाला इक्क करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा इक्क वखावांगा।

साची सेवा सच जणावांगा। शंकर धूआंधार विच्चों उठावांगा। कर प्यार धूढ़ी टिक्का मस्तक लावांगा। एह आधार सर्ब समझावांगा। हत्थ त्रसूल इक्क फड़ावांगा। लहणा देणा मूल झोली पावांगा। बण धुर दा कन्त कन्तूल, सच संदेशा इक्क सुणावांगा। तिन्नां दस्स के सच असूल, साची सिख्या इक्क दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठावांगा।

मेहर नज़र प्रभू उठाएगा। त्रैगुण माया आप प्रगटाएगा। रजो तमो सतो नाम धराएगा। पंज तत्त आपणी गंढु पवाएगा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल कराएगा। शब्द संदेशा भेज, धुर दा हुक्म आप जणाएगा। सच समझा के आपणी खेल, सेवा इक्को इक्क वखाएगा। पंज तत्त कर के धुर दा मेल, बंधन आपणा नाम रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा इक्को इक्क जणाएगा।

साची सेवा हरि जणौंदा ए। त्रैगुण माया मेल मिलौंदा ए। पंज तत्त साचा जोड़ जुड़ौंदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझौंदा ए। चारे खाणी वंड वंडौंदा ए। अंडज जेरज उत्भुज सेतज साची धार बधौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा इक्को इक्क रखौंदा ए।

सेवा अंदर खाणी चार रचौंदा ए। सेवा अंदर विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, साचे मार्ग आपे लौंदा ए। सेवा अंदर बोल जैकार, चारे बाणी राग अलौंदा ए। सेवा अंदर कर पसार, लक्ख चुरासी वंड वंडौंदा ए। सेवा अंदर महल्ल अट्टल उसार, लोक परलोक आप सुहौंदा ए। सेवा अंदर गगन मण्डल खेल निराल, आकाश प्रकाश नूर चमकौंदा ए। सेवा अंदर रव सस आधार, सेवा अंदर मण्डल मंडप डेरा लौंदा ए। सेवा अंदर ज़िमीं असमान, धरत धवल आप वखौंदा ए। सेवा अंदर खेल करे जुग चार, जुग चौकड़ी बंधन पौंदा ए। सेवा अंदर बोल जैकार, चारे वेदां राग अलौंदा ए। सेवा अंदर खेल नयार, निरगुण सरगुण घाल कमौंदा ए। सेवा अंदर हो त्यार, निरवैर पुरख वेस वटौंदा ए। सेवा अंदर कर शंगार, पंज तत्त काया चोला आप हंढ्ढौंदा ए। सेवा अंदर बण गुरू अवतार, लोकमात वेख वखौंदा ए। सेवा अंदर शब्दी धार, धुर दा राग अलौंदा ए। सेवा अंदर बण लिखार, कातब आपणी कलम चलौंदा ए। सेवा अंदर कर प्यार, अमृत मेघ बरसौंदा ए। सेवा अंदर खेल संसार, सज्जण सुहेले मेल मिलौंदा ए। सेवा अंदर हो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणौंदा ए। सेवा अंदर जलवा नूर कर उजिआर, ज़ाहर

ज़हूर पड़दा लहुदा ए। सेवा अंदर पीर पैगम्बर बण के मीत मुरार, सगला संग निभौंदा ए। सेवा अंदर कलमा कायनात बोल जैकार, हदाइत इक्को इक्क सुणौंदा ए। सेवा अंदर भगत भगवन्त कर त्यार, भगती इक्को इक्क वखौंदा ए। सेवा अंदर सन्त सज्जण लए उठाल, अंदर वड़ वड़ मेल मिलौंदा ए। सेवा अंदर गरुमुखां करे प्रितपाल, जुग जुग सिर सिर हत्थ रखौंदा ए। सेवा अंदर गुरसिखां चले नाल, जगत विछोड़ा दूर करौंदा ए। सेवा अंदर खाणी बाणी कर त्यार, शास्त्र सिमरत वेद पुरान बणत बणौंदा ए। सेवा अंदर गीता ज्ञान दे आधार, अञ्जील कुरान ढोला गौंदा ए। सेवा अंदर करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमौंदा ए। सेवा अंदर तेई अवतार, साहिब सतिगुर हुक्म चलौंदा ए। सेवा अंदर ईसा मूसा मुहम्मद लए उठाल, मुस्सला इक्को हेठ वछौंदा ए। सेवा अंदर नानक गोबिन्द बन्न धार, साची सेवा इक्क लगौंदा ए। सेवा अंदर भगत अठारां कर प्यार, प्रेम प्रीती जोड़ जुड़ौंदा ए। सेवा अंदर गोबिन्द बणाया आपणा बाल, पिता पुरख अकाल अखवौंदा ए। सेवा अंदर बाले नीहां हेठां दए सवाल, सेवा अंदर महल्ल अट्टल रुशनौंदा ए। सेवा अंदर खण्डा खड़ग खिच कटार, तीर तरकश भथ्था आपणे कंध वखौंदा ए। सेवा अंदर सभ कुछ वार, आप आपा मेट मिटौंदा ए। सेवा अंदर सत्थर हंढ्ढाया सांझे यार, माछूवाड़ा रुत्त सुहौंदा ए। सेवा अंदर बोल जैकार, पुरख अकाल इक्क ध्यौंदा ए। सेवा अंदर बण भिखवार, साची भिख्खया मंग मंगौंदा ए। सेवा अंदर देवणहार, धुर दी वस्त आप वरतौंदा ए। सेवा अंदर अगम्मी गुफ्तार, बिन रसना जिह्वा राग अलौंदा ए। सेवा अंदर करे खेल आप निरँकार, निरगुण आपणी कल वरतौंदा ए। सेवा अंदर कीता कौल इकरार, धुर दा लेख आपणे हत्थ रखौंदा ए। सेवा अंदर कल कलकी लै अवतार, सम्बल आपणी रुत्त सुहौंदा ए। सेवा अंदर गोबिन्द कर प्यार, शब्दी जोती जोड़ जुड़ौंदा ए। सेवा अंदर लेखा जाण जुग चौकड़ी चार, नव नौं पन्ध मुकौंदा ए। सेवा अंदर हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पौंदा ए। सेवा अंदर करे खेल आप करतार, कुदरत आपणा खेल रचौंदा ए। सेवा अंदर वेखे विगसे वेखणहार, नेत्र लोचण नैण खुलौंदा ए। सेवा अंदर हो के गरिफ़तार, आपणा बल ना कोई जणौंदा ए। सेवा अंदर आपा आप वार, पंज तत्त काया माटी तत्त जलौंदा ए। सेवा अंदर जोती जोत कर चमत्कार, दीआ दीपक इक्को डगमगौंदा ए। सेवा अंदर करे खेल सिरजणहार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार साची करनी कार कमौंदा ए। सेवा अंदर भगत भगवन्त लए उठाल, फड़ बाहों गोद बहौंदा ए। सेवा अंदर वेखे लाल, लालन आपणा रंग रगौंदा ए। सेवा अंदर हो दयाल, दयालता इक्को इक्क वरतौंदा ए। सेवा अंदर नाता तोड़ काल महांकाल, महबूब आपणा घर वखौंदा ए। सेवा अंदर सचखण्ड दवार सची धर्मसाल, हरि भगतां लई बणौंदा ए। सेवा अंदर सन्त सुहेले लए भाल, पुरख अबिनाशी दर दर घर घर सेव कमौंदा ए। सुण सेवा आ के वेख सभ दा हाल, बिन सेवक नज़र कोई ना औंदा ए। सभ दे मस्तक नूरी जल्वा इक्क जलाल, जौहर इक्को रंग वखौंदा ए। श्री भगवान साची सेवा विच्चों लए भाल, जो भालयां हत्थ किसे ना औंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा विच्च सर्ब रखौंदा ए।

सेवा कहे मोहे होई हैरानी, नेत्र नैणां नैण शरमाईआ। श्री भगवान तेरी खेल महानी, मैं समझ सकां ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे दर उत्ते भरन पाणी, माण अभिमान ना कोई जणाईआ। तेरी सेवा विच्च फिरदे चारे खाणी, चारों कुण्ट नज़री आईआ। तेरी सेवा विच्च दो जहान चलावण निशानी, निशाना इक्को इक्क तकाईआ। तेरी सेवा विच्च सभ ने बोली बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे मोहे वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

सुण सेवा प्रभ कहे करतार, हरि करता दए जणाईआ। सेवा विच्च सर्ब संसार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुखां सेवा अपर अपार, जन भगतां सेवा सोभा पाईआ। मनमुखां सेवा जगत प्यार, कूड़ा नाता जोड़ जुड़ाईआ। साची सेवा हत्थ ना आए बिन सतिगुर चरन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

सेवा कहे मैं तैथ्थों डरदी, उच्ची कूक सकां ना राईआ। मनमुख दवारे जावां मरदी मरदी, मेरी चले ना कोई वडयाईआ। तेरे प्रेम दा मिले कोई ना दर्दी, धुर दा संग ना कोई बणाईआ। मन वासना सभ दी लग्गी मर्ज़ी, मुजरम दिसे जगत लोकाईआ। जिस वेले जन भगत दवारे वड़दी, गीत गावां खुशीआं चाईं चाईंआ। निउँ निउँ पैर उहनां दे फड़दी, जो तेरे चरनी लगन सरनाईआ। गोली बणां दर दी, घर घर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे इक्क वर, हरि एका दे वखाईआ।

सुण सेवा कहे निरँकार, हरि करता आप जणाइंदा। सेवा विच्च खेल अपार, अपरम्पर आप समझाइंदा। साची सेवा अपर अपार, धुर दा फल खवाइंदा। जगत सेवा कूड़ पसार, करता कीमत कोई ना पाइंदा। कूड़ी सेवा अंदर नेत्र रोवे पुरख नार, पुत्तर धी सर्ब कुरलाइंदा। जगत कटुंब ना कोई अधार, सज्जण सैण नज़र कोई ना आइंदा। साची सेवा गुरमुख गुरमुख करन प्यार, प्रेम प्रीती विच्चों प्रगटाइंदा। जिस सेवा दी खिले सच गुलज़ार, सो बगीचा हरि महकाइंदा। सेवा करदे करदे सेवा मंगदे गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर झोली सर्ब डाहिंदा। सभ दी सेवा करे आप निरँकार, सेवा करदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा।

सुण सेवा धुर दी गाथ, हरि करता आप जणाईआ। तेरी सेवा जगत दात, पारब्रह्म वडयाईआ। तेरा मेला भगतां साथ, सन्त साजण जोड़ जुड़ाईआ। तेरी सेवा प्रभ चरन प्रीती नात, घर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सेवा कहे मोहे कोई ना नाता, जगत मिले ना कोई वडयाईआ। इक्को मंगाँ

धुर दी दाता, दातार तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मैं जन भगत दवारे ख़ाली बर्तन मांझां नाल परातां, ख़ाक धूढ़ी नाल सेव कमाईआ। निउँ निउँ गुरमुखां दे चरना वल झाकां, नैण उपर ना सकां उठाईआ। हौली हौली सुणां उहनां दीआं बातां, जो खुशीआं तेरा ढोला गाईआ। जिन्हां बिरहों विछोड़े विच्च लँघाईआं रातां, तिन्हां पैर हेठ आपणा सीस टिकाईआ। चुक्क के भार धन्न धन्न आखवां, कह कह शुकर मनाईआ। खुशीआं विच्च कहां मेरीआं मुक्कीआं वाटां, अग्गे पन्ध नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देणी माण वडयाईआ।

श्री भगवान कहे सेवा तूं सेव की कमौणी आं। नेत्र लोचण लए पेख, हरि जू की की खेल वरतौणी आं। जन भगतां पिच्छे धरया भेख, तिस आपणी जोत अकालण निरगुण सेवा विच्च रखौणी आं। भगत दवारे वेख सच कोट, फूलण बरखा इक्क बरसौणी आं। दे नाम भंडार अतोट, अतुट दात वरतौणी आं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा साची सच कमौणी आं।

सेवा कहे तूं भगवान, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ। एह दात मैनूं दे दे दान, दर दरवेश बैठी झोली डाहीआ। मैं जा के सेवा करां महान, सेवक बण के सेव कमाईआ। जिस मार्ग गुरमुख आण, तिन्हां केस चवर झुलाईआ। जिस वेले मेरे उपर चरन टिकान, मैं खुशीआं नाल लवां उठाईआ। नाले कूक पुकार करां बिना ज़बान, अंदरे अंदर राग सुणाईआ। चलो ओस नूं मिलीए आण, जो धुर दा मालक बेपरवाहीआ। जिस मेरी सेवा लाई विच्च जहान, जन भगतां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

सुण के बात सेवा दी हरि, धुर संदेशा इक्क जणाईआ। उठ बाल आ दर, दर्दी दर्द वंडाईआ। आपणी कहाणी दस्स घड़, की की बणत बणाईआ। तेरी किस लगाई जड़, पत डाहली कवण महकाईआ। की करनी जुग जुग रिहा कर, निहकरमी इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

सेवा कहे मेरे रूप पंज, पंजां विच्चों नज़री आईआ। पंज कहण तेरी धार सूरा सरबंग, शहनशाह तेरी बेपरवाहीआ। शहनशाह कहे मेरा खेल इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

सेवा कहे मेरा मेल पंज, पंज मिले वडयाईआ। मेरा रूप दा ना कोई तत्त काया कंच, गढ़ नज़र कोई ना आईआ। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश ना कोई नूर अगनी अंच, धूआंधार ना कोई रखाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल बणाई मेरी बणत, घाड़त आपणी हत्थीं घड़ाईआ। जिस दा भेव नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग किसे ना

पाया जीव जंत, गुर अवतार ना कोई लेख लिखाईआ। मेरी महिमा सदा अगणत, रसना जिह्वा ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेरा भेव दए चुकाईआ।

सेवा कहे मेरे पंज रूप, रूपावन्ती नज़री आईआ। साहिब स्वामी मेरा भूप, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। मेरी सेवा चार कूट, चारे रूप दए समझाईआ। पंजवीं सेवा चरन विच्च रक्ख सभ तों करे मज़बूत, हार जित आपणे हत्थ रखाईआ। ना कोई तत्त ना वजूद, बुत्त रूप ना कोई वखाईआ। साहिब सतिगुर इक्क महबूब, मेहरवान दए वडयाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा मौजूद, विछोड़ा नज़र कोई ना आईआ। साहिब सतिगुर मैनूं कर के रक्खया महफ़ूज़, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान होए सहाईआ।

सेवा कहे मेरा रूप प्रगट, श्री भगवान आप प्रगटाईआ। मेरा खेल हर घट, हरि करता आप जणाईआ। मेरा खेल मर घट, मड़ी गोर वेख वखाईआ। मेरा खेल तीर्थ तट्ट, तट्ट किनारा फोल फुलाईआ। मेरा खेल मन्दर मट्ठ, शिवदवाले वेखां चाईं चाईंआ। मेरा खेल हत्थ पुरख समरथ, श्री भगवान साची सेवा लाईआ। मेरा खेल सदा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच सेवा दए वडयाईआ।

सेवा कहे मेरा प्रीतम उह, देवे माण वडयाईआ। जिस सेवा अंदर आपणी सेवा लाई छब्बी पोह, वेस अव्वलड़ा रूप वटाईआ। सेवा ख़ातर निरगुण हो, सरगुण रंग ना कोई रंगाईआ। मीत मुरारा सज्जण लिआ टोह, गोबिन्द आपणे अंग लगाईआ। दो जहानां सभ तों सेवा खोह, साची सेवा इक्को रूप वखाईआ। कूड़ कुटम्ब नालों तोड़ मोह, जन भगतां होए सहाईआ। सेवा कर कर दुरमत मैल धो, निर्मल निर्मल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सेवा आप दरसाईआ।

सेवा कहे मैं पंच प्यारी, सच रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी मैंनूं सारे वेंहदे रहे कवारी, जोबन मती नूर अलाहीआ। डोली फड़ किसे ना चाढ़ी, जगत कहार कंध ना कोई उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रेम प्रीती करदे गए वारो वारी, वारता लेखे जाणे लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल गए उच्ची कूक पुकारी, धुर दा नाद वजाईआ। सभ दा दाता शहनशाह आवे इक्को वारी, एकँकारा नाउँ उपाईआ। जिस दी सेवा सर्ब तों न्यारी, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। जिस दी सेवा सेवक रूप बण के देवे बहारी, कूड़ा किरकट हूंझ वखाईआ। तिस सेवा संग साहिब लगाए यारी, मेहरवान जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वडयाईआ।

सेवा कहे मेरे मेहरवान, मोहे सच दे दृढ़ाईआ। मेरा लेखा कब करें परवान, आपणे

लेखे लाईआ। शाह पातशाह हो मेहरवान, निरगुण निरवैर आप जणाईआ। बीस बीसे जन भगतां दे माण, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक्क दृढ़ाईआ।

साची सिख्या इक्क दृढ़ाउँदा ए। श्री भगवान हुक्म सणौंदा ए। बीस बीसा ख़ुशी मनौंदा ए। जन भगतां आप वडिऔंदा ए। साची सेवा तेरी रीती इक्क वखौंदा ए। पिछली बीती आप झोली पौंदा ए। अग्गे कर के ठंडी सीती, जन भगतां जोड़ वखौंदा ए। तूं वेखीं प्रभ दी लुकण मीटी, औंदा जांदा नज़र किसे ना औंदा ए। करे खेल अगम्मी अनडीठी, अनडिठड़ी कार कमौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तैनूं सच दवार बहौंदा ए।

सेवा तैनूं सच दवार बहावांगा। जन भगतां अंदर आप रखावांगा। काया मन्दर सच सुहावांगा। भाग लगा के डूंघी कंदर, निर्मल नूर जोत चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, किस वेले खेल कर के मेरा सच्चा घर वखावेगा।

श्री भगवान दया कमौंदा ए। सच सुनेहुड़ा इक्क सुणौंदा ए। तेरा राह आप चलौंदा ए। बीस बीसा ढूंड ढुंडौंदा ए। जगत जगदीशा रंग रंगौंदा ए। सभ दा ख़ाली कर के ख़ीसा, ख़ालस तेरा रूप जणौंदा ए। धुर दी दे इक्क हदीसा, हज़रत कलमा इक्क पड़ौंदा ए। दूर दुराडों आ नज़दीका, नेरन नेर पन्ध मुकौंदा ए। मेरे भगतां नाल ना करीं शरीका, शरीकत तेरी सर्ब गवौंदा ए। एहनां अंदर मेरी तौफ़ीका, तोहफा तेरी झोली पौंदा ए। तूं सेवा सेवा कराईं नाल रीझां, रहीम रैहमान वेख वखौंदा ए। अग्गे वेख लँघ दहलीजां, पर्दा उहला आप उठौंदा ए। नेत्र तक्क ला के नीझां, नैण अक्ख खुलौंदा ए। सेवा वेख कहे प्रभ नज़री आया मीता, मित्र प्यारा जो अखवौंदा ए। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जिस अकट्ठा कीता, घर इक्को रंग चढ़ौंदा ए। भेव चुकाया ऊँचां नीचां, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश संग निभौंदा ए। जिन्नां नैण खोल्ह तीजा, राती सुत्तयां दरश दिखौंदा ए। एहनां दी सेवा अन्तर रीझा, प्रेम प्रीती इक्क वखौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप जणौंदा ए।

सेवा कहे मैं सेवा करनी, सेवक रूप वटाईआ। भगवान कहे लग्ग एहनां दी चरनी, जो चरनी बैठ सीस झुकाईआ। सेवा कहे मैं पाणी भरनी, दर दर घर घर फेरा पाईआ। भगवान कहे औखी मंज़ल चढ़नी, बिना हरि किरपा चढ़न कोई ना पाईआ। सेवा कहे मैं तैथ्थों डरनी, सीस ना उपर उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं उह खेल करनी, जो आदि जुगादि ना किसे कराईआ। सेवा कहे मैं मरदी मरनी, मर मर आपा आप मचाईआ। श्री भगवान कहे तूं इक्को सिख्या पढ़नी, जो गुरमुख देण समझाईआ। सेवा कहे मैं कन्नी फड़नी, चोली गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सेवा सच सेवा दए समझाईआ।

सेवा वेख सेवक सेवा करन, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ । रसना जिह्वा परम पुरख दा ढोला पढ़न, सच्चा राग अलाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर मरन, जीवत जीवण रूप वटाईआ । तूही तूही करन, मैं ममता रहे गवाईआ। जागत सोवत खुशीआं करन, कर कर रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह देवे सच माण वडयाईआ।

श्री भगवान कहे सुण धुर सुचज्जी, अच्छी तरा समझाईआ। सेवा अंदर रात संगत गई भज्जी, सुरती सतिगुर विच्च रलाईआ । जिस वेले रात होई अद्धी, अन्ध अन्धेर रहे गवाईआ। गुरमुख गुरसिख हत्थ खलोते बध्धी, बन्दना इक्क कराईआ। किशन सिँघ हौली जिही बात सुणाए अद्धी, अग्गों बैठा ज़बान बंध कराईआ। साहिब सतिगुर तेरी वड्डिआई वड्डी, किछ कहणा कहण ना पाईआ। ओसे वेले पंजां सपुत्तरीआं किहा बापू गल्ल अच्छी, अच्छी तरां जणाईआ। मैंढी सीस कर के नंगी, खुलड़े केस दित्ती दुहाईआ। लालो उठ के मंग मंगी, मेहरवान हो सहाईआ। श्री भगवान किहा सत्त महीने एहनां दी औध रहन्दी, लेखा मुक्कया थाऊँ थाईंआ। ओसे वेले संगत सारी रो के कहन्दी, बख्श साहिब सचे गुसाईआ। इक्को तेरे प्रेम दी लग्गे मैहन्दी, दूजा रंग ना कोई रंगाईआ। तेरी काया तेरे हुन्दआं ढैहन्दी, लज्जया तेरी झोली पाईआ। संगत तेरी तेरा भाणा सहन्दी, सिर सिर खुशी मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां हत्थां फड़ के किहा हरि दया करे कला ना चढ़दी ना ढैहन्दी, ढह ढेर ना कोई बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे दान हो मेहरवान जगत जहान निशानी रहन्दी, लेखा सके ना कोई मुकाईआ।

सुण बचन लाल नेत्र रो, लालो आख सुणाईआ। तेरे बिनां ना साड्डा को, संग ना कोई वखाईआ। तेरे जोगे गए हो, दिवस रैण निक्कीआं निक्कीआं बच्चीआं रहीआं गाईआ। क्यों प्रभू तोड़दा मोह, नाता पंज तत्त छुडाईआ। श्री भगवान दयावान आपे हो, सिँघ किशन दित्ती वडयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रक्ख विचोला मैनूं एहनां जोगा गिआ हो, सिर ओढण पर्दा दोशाला आपणा आप टिकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जींवदयां जींवदयां जीउँदे जीव लए तराईआ।

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

★ २५ पोह २०२१ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे नवित्त जेठूवाल" ★

हरि सतिगुर सेवा अगम्मा फल, अमृतां विच्चों अमृत नज़री आईआ। जिस नूं खाध्यां मिले निहचल धाम अट्टल, पदवी इक्को इक्क जणाईआ। सच दवारा लैण मल्ल, चरन कँवल सरनाईआ। किसे दे हिलाइआं मूल ना जाण हल्ल, पासा सके ना कोई बदलाईआ। पुरख अबिनाशी होया जिन्नां दे वल, वलवले सारे दए चुकाईआ।

लोड़ रही ना गंगा जल, मन्दरां सीस ना कोई निवाईआ। सिध्धा सच दवारे देवे घल्ल, घड़ी पल ना कोई अटकाईआ। सोहँ नाम दा वजदा जाए टल, टल्लीआं वाले बैठण मुख शरमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा जन्म कर्म दा लेखा दित्ता उथल, पिच्छे बाकी ना कोई रखवाईआ।

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

तकलीफ़ मिटौण दा जे छेती चाअ, सति सच सच दिआं दृढ़ाईआ । इक्को मन्न सच रज़ा, हुक्म हक़ सुणाईआ । तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला लैणा गा, अन्तर आत्म वज्जे नाम वधाईआ। नाता जुड़े बेपरवाह, बेपरवाही विच्च रखवाईआ। बिनां दवा दारू तों होवे शखा, मरीज मरजी देवे गवाईआ। जो कोई तबीद बिनां पुच्छयां दस्सयां घर जावे आ, उस दा नुसखा लउ अजमाईआ । बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द लैणा खा, हिरदे अंदर ध्यान लगाईआ। रोगाँ दा रोग सोगाँ दा सोग सैहज सुभा देवे गवा, कीमत टक्कयां पैसयां वाली ना कोई रखवाईआ। जिस उत्ते किरपा हो जाए उहनूं पए ना फेर एह वबा, जिस नाल खून चले वाहो दाहीआ। हुण अग्गे बहुती भुगतणी नहीं पैंदी सजा, दुःख सुख विच्च बदलाईआ। अंदरों बदल देवे आबो हवा, पवण पवण स्वासां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत बीमारी कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ।

सभ तों वड्डी मानव सेवा जायदाद, जगत जहान नज़री आईआ। जिस नूं जबत करन वास्ते कोई कानूंन कायदा नहीं आहिद, खुरद बुरद ना कोई कराईआ। जिस विच्च नुकसान नहीं होवे बहुता फाइद, फैसला जरमन दा हक़ वखाईआ। प्रेम नालों होर केहड़ी चंगी कडाइत, रवाइत नज़र कोई ना आईआ। हँकारीआं नूं करनी हदाइत, दुखीआं दी करनी हमाइत, शरीआं नूं दस्सणी शराइत, दीनां मज़हबां जोड़ जुड़ाईआ। मज़लूमां दी पूरी करनी खाहिश, मासूमां दी करनी तलाश, चार वरनां दी इक्क थां करनी रिहाइश, मुहब्बत विच्च करनी पैमाइश, पूरब एशीआ इक्को रंग रंगाईआ। सच दी लगौणी नमाइश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच व्यक्ती जुग जुग हुक्में अंदर आपणा हुक्म मनाईआ।

जगत जायदाद बुद्धि, धन्न दौलत जगत नाल वडयाईआ । प्रेम भावना विश्व सेवा सभ तों अगम्मी, जिस दी कीमत ना कोई चुकाईआ। साची जायदाद बैरन साहिब तुहाढ्ढी साढ्ढे तिन्न हत्थ कुली, जिस विच्च प्रेम प्यार अनमुल हीरा रतन दित्ता टिकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सत्त दीप नौं खण्ड तुहाढ्ढी जायदाद खुल्ली, एथ्थे वेखो जायदादां दे मालक तुहाढ्ढे सज्जण नज़री आईआ। प्रेम भावना कोई नहीं बुरी, संसार नूं छुडौणा कोलों कसाईआं वाली छुरी, जो मानव मानव उपर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए जणाईआ। (५ वसाख श सं १ आर ऐल शरमा)

★ ★ ★ ★ ★

जन भगतो कोई ना किहो असीं वाढी नाल कीती दाती, बल बाहवां वाला वखाईआ। तुहाढ़े पिच्छे सचखण्ड विच्च खेल कीता रातीं, गुर अवतार पैगम्बर इक्ठे कर के सभ नूं दित्ता वखाईआ। जरा वेखो मार के झाती, बेदाअविआं दे हावे दित्ते गवाईआ। मेरी लेटे उत्ते छाती, बच्चयां नालों बच्चे प्यारे लए बणाईआ। मेरी अज्ज दी नहीं कोई बाती, जुग चौकड़ी चली आईआ। तुहाढ़ी मंज़ल पार कर दित्ती घाटी, घाटा एथ्थे ओथ्थे दो जहान रहे ना राईआ। तुहाढ़ी मंज़ल मुक्की वाटी, सचखण्ड दवारा दिआं वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

(१३ वसाख श सं २)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सच बेनन्ती कहे, मैं चिढ़ीआ इक्क मरी, मुरीदो मुशर्द दा भेव खुल्ह़ाईआ। सभ नालों पैहलों मैनूं मिल्या हरी, जिस हरी दवारे दित्ता पुचाईआ। जिस बुढ़ी दी अज्ज बेनन्ती सी बड़ी, उस दे पिच्छेमैं हत्थ औणा सी जीउँदी, पर ओस दे पिच्छेमर के आपणी सेवा लई कमाईआ। सतिगुर शब्द हुंदा नहीं घड़ी घड़ी, मेहर नाल जुग जुग पार कराईआ। मैं रात दी तपदी सां बड़ी, केहड़ा वेला आवे घड़ी, मेरा लेखा लग्गे ज़री ज़री, आप आपणा भेटा दिआं कराईआ। क्यों मैं गोबिन्द वेले इक्क वार ओस दे बाज़ तों सां डरी, चरनां विच्च आण के आपणी जान बचाईआ। सीस निवा के किहा गोबिन्द जे किते मैनूं वी नाल मिलाएं गुरमुखां दी लड़ी, कन्नी कन्नी नाल बंधाईआ। गोबिन्द ने ओसे वेले किरपा करी, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले मेरे पुरख अकाल ने लाई प्रेम वाली झड़ी, तेरा नाता लवां जुड़ाईआ। जे तूं मिट्ठी ते सौंदी मिट्ठी ते बहिंदी तैनूं भगतां विच्च बिठा देवां उत्ते दरी, बिन कीमत तों तेरी कीमत देवां पाईआ। तेरे उत्ते ओढण पर्दा देवां आपणा ज़री, ज़ाहर ज़हूर हो के पर्दा दिआं चुकाईआ। डरन वाल्लयां ने वड़ जाणा आपणे घरीं, तूं सचखण्ड डेरा लाईआ। तेरे प्यार विच्च इक्क गुड़ दी भेली फड़ी, तेरी कुरबानी दी महिमानी भगतां देणी खवाईआ। तूं अजे ना व्याही कर्म कांड दी छड़ी, इक्क नालों विछड़ी ते इक्क नाल जुड़ाईआ। वेखयो भगतो कोई हँकार नाल मारिओ ना तड़ी, परम पुरख परमात्म लक्ख चुरासी जीव जंत दा मालक नज़री आईआ। जिस ने सेवा करी, ओसे दे लेखे पड़ी, देवणहार सर्ब वडयाईआ । तुहाढ़े वेंहदिआं बिना बबानो मंज़ल चढ़ी, दर साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। (१८ फग्गण श स ४)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

नारद कहे प्रभ बरस दे अमृत मेहों, अगम्मी धार वहाईआ। आत्म परमात्म बणा निहों, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुका दे साढ़े तिन्न हत्थ

सेउँ, सीआं कम्म किसे ना आईआ। मेहरवान महबूब सच खुदा देउ, देवत सुर सीस निवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी एका देवी देउ, दूजा नज़र कोई ना आईआ। मैं हैरान हो गिआ तूं सभ दा इक्को पिओ, पिता पुरख अकाल तेरी शरनाईआ। तेरे भगत तेरी संगत खातर सच प्यार दा कट्टण गेहूं, गंदम तेरा नाम वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

नारद कहे मैं वेखदा रिहा जोश, जोशीले गुरमुख नज़री आईआ। मैनूं आपणी भुल्ल गई होश, मेरी चली ना कोई चतुराईआ। मैं तिन्न वारी हो के अलोप, प्रभ चरनां सीस निवाईआ। फेर वेखे जा के हज़रत ईसा वाले पोप, चरचां विच्च जा के ध्यान लगाईआ । फेर मुल्लां शेख़ां कीती खोज, मुसाइकां फोल फुलाईआ। फेर ग्रन्थी तक्के नाल चोज, माया ममता विच्च हलकाईआ। जां भगतां कोल आया ओनूं मैनूं किहा कणक वढुणी साड्डा जोग, इस तों वड्डी भगती नज़र कोई ना आईआ । जिस नूं भगत भगवान दा मिल के लगदा अमृत भोग, मास बरख दिवस आपणी खुशी मनाईआ। रसना सुणया इक्क सलोक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१० वसाख श स ५)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

करनी कहे मेरी जुग जुग कार, अवतार पैगम्बर गुर गए समझाईआ। प्रभ ने वक्खरी बध्धी धार, कलिजुग रीती दित्ती उलटाईआ। जन भगतां दे अधार, सिर आपणा हत्थ रखाईआ । जो प्रेम नाल करे इक्क वार निमस्कार, कोट जन्म दा कर्म दए गवाईआ। जिनूं सेवा कीती अपर अपार, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। सतिगुरू भंडारा भगतां दा भंडार, वस्त गुरमुखां नज़री आईआ। गुरसिखो सभ दे अन्तर बख्शां उह प्यार, जिस प्रेम प्रीती नूं कबीर जुलाहा गिआ समझाईआ। तुहाढ़ा चार दिन दा विहार, चौथे जुग तों खैहड़ा दए छुडाईआ। तुहाढ़े अंदर दी सितार, प्रेम प्रीती विच्च वजाईआ। जेहड़ा सीस ते चुक्कया भार, कुकर्म दी गठड़ी दित्ती सुटाईआ। बुढ्ढे नढ्ढे वड्डे छोटे नौजवान देवे तार, स्त्री पुरुष वंड ना कोई वंडाईआ। तुसीं मेरे मैं तुहाढ़ा दोहां दा इक्को घर बाहर, भगत दवारा इक्को सोभा पाईआ। खुशी नाल सभ ने पंज वार बोलणा जैकार, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ नूं प्रेम प्रीती विच्च करे त्यार, गुरमुखां घर जाणा चाईं चाईआ। (१५ वसाख श स ६)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

विसाख कहे मैं वेखी अगम्मी हस्ती, जो हस्त कीटां विच्च समाईआ। जिस दी भगत प्यार बस्ती, नगर खेड़ा आप सुहाईआ। आत्म धार उस दी वसदी, वसे चाईं चाईआ। सतिगुर दरस नूं सदा नस्सदी, भज्जे वाहो दाहीआ। उह मेलण निज नेत्र लोचण अक्ख दी, नैण कँवल नैण नाल मिलाईआ। प्रीआ प्रीतम प्यार विच्च हस्सदी, हँस मुख सोहँ हँसा रूप बणाईआ । धार लवे अमृत निझर रस दी, जगत रसना रस तजाईआ। खेल तक्के पुरख अलक्ख दी, अलख अगोचर जो दृढ़ाईआ। प्रीती प्यार बंधाए नत दी, चरन कँवल कँवल सरनाईआ। तृष्ना पूरी करे पंज तत्त दी, सनमुख सतिगुर दर्शन पाईआ। आशा रहे ना मनमत दी, गुरमत मेला सहज सुभाईआ। एह खेल परमेश्वर पति दी, पारब्रह्म जो नूर इल्लाहीआ। जिस दी कला कलिजुग धार अन्तम जट्ट दी, किरसाणा आपणी किरस कमाईआ। उहदी जोत प्रकाश लट लट दी, नूर नुराना डगमगाईआ। उहदी वस्ती शब्दी धुर दे हट्ट दी, हटवाणा इक्को इक्क अखवाईआ। जिस दी याद विच्च जन भगतां तृष्ना नठ्ठदी, भज्जे वाहो दाहीआ। खुशी तक्के विसाख अठ्ठ दी, अठां तत्तां वज्जे वधाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी मिलणी प्रभू प्यार इक्ठ दी, इकठ्ठयां सभ दा लेखा पूर कराईआ। जन्म जन्म दी मैल सतिगुर सेवा विच्च लथ्थदी, कर्म कर्म दा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग अन्तम एह भगती रक्खी हक़ दी, कम्म काज करदिआं पार कराईआ। तुहाढ्ढी लाज रक्खणी दो जहान नक्क दी, जगत निशाने नाल झुलाईआ। तुहाढ्ढी लेखे लाउणी इक्क इक्क बूंद रत्त दी, जो बिरध बाल जवान पसीना रहे वगाईआ। इस तों परे होर खेल नहीं कोई तप दी, जगत तपीश्र हत्थ कदे ना आईआ। जन भगतो तुहाढ्ढे कर्म दी फसल पकदी, कुकर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार इक्क पुरख समरथ दी, समरथ आपणी दया कमाईआ। (८ वसाख श स ८)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

जन भगत कहण साड्ढे अन्तर अगम्म विचार, बुद्धि समझ कोई ना पाईआ। पिच्छे बीते जुग चार, कलिजुग चौथा दए दुहाईआ। की भगतां खेल करदा रिहा करतार, कुदरत दा करता आपणी कार कमाईआ। जगत तसीहे दे विच्च संसार, मार्ग भगती वाला जणाईआ। कलिजुग अन्तम किरपा कर अपार, अपरम्पर आपणी दया कमाईआ। फड़ फड़ बाहों दए तार, तारनहार इक्क अखवाईआ। साची भगती सतिगुर हुक्म दी कार, जगत माला दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख सूरबीर बणा हुशियार, जोधा आपणा मेला लए मिलाईआ। सन्त सुहेले बणा बरखुरदार, बरखुरदारी विच्च वेख वखाईआ। पूरब जन्म दा लहणा दए उधार, कज़ा मकरूज़ आप चुकाईआ। सेवा विच्च सेवा करन सेवादार, सेवा सतिगुर सतिगुर साचे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ। (१८ फग्गण श सं ८)

★ ★ ★ ★ ★

धरनी कहे मेरा खुशीआं वाला सतारां विसाख प्रविष्टा, परम पुरख दिआं जणाईआ। तेरे भगतां दी प्यार विच्च खुली दिसे दृष्टा, दृष्टी तेरे विच्च समाईआ। जिनां दा आत्म परमात्म धार निरगुण निरगुण निसचा, निहचल धाम बह के तेरा दर्शन पाईआ। उह रूप बण गए साचे गुरसिख दा, गुरमुख हो के गुर गुर सेव कमाईआ। सच प्यार करन एकँकार इक्क दा, इक्क इकल्ले तेरी ओट तकाईआ। झगड़ा छड्ड के पत्थर इट्ट दा , पाहिना पन्ध मुकाईआ। इक्को सहारा लै के परमेश्वर पित दा, पारब्रह्म प्रभ दर तेरे अलख जगाईआ। तूं सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग जन भगतां लेखा आइउँ लिखदा, कलिजुग अन्त दे वडयाईआ। सच प्यार बख्श अन्तर हित दा, हितकारी हो के वेख विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी शरनाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते तेरे भगत सुहेले टप्पदे, खुशीआं विच्च भज्जण वाहो दाहीआ। अन्तर तूं मेरा मैं तेरा नाम जपदे, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। सच प्यार विच्च आपणा अन्तर रतदे, रतन अमोलक हीरे नज़री आईआ। उह वणजारे तेरे आत्म ब्रह्म तत्त दे, तत्तव तत्त आपणा लेखा देणा वखाईआ। उह वणजारे नहीं कूड़ी मत दे, बुध बिबेक देणी कराईआ। कलिजुग अगन विच्च फिरन ना तपदे, सांतक सति सति देणा कराईआ। तेरे नाते हो जाण पक दे, जगत जहान ना कोई तुड़ाईआ। गुरमुख भगत सुहेले सेवा करदे कदी ना थक्कदे, थकावट विच्च कदी ना आईआ। उह वणजारे तेरे घर विच्च हो गए हक़ दे, हकीकत दे मालक हक़ सभ दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

धरनी कहे प्रभू मेरे कमलापाती, पतिरमेश्वर सीस निवाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरि संगत सेवा करदी तन वजूद नाल दाती, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। उनां दी लेखे लाउणी आपणे दर ते अज्ज दी राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। अगला जीवण चरन प्रीती बख्श हयाती, प्यार मुहब्बत विच्च रखाईआ। जेहड़ी वस्त हत्थ नहीं आउँदी जगत जगिआसू साध सन्त फिरदे लोकमाती, जन्म जन्म भज्जण वाहो दाहीआ। उह लहणा देणा सभ दा पूरा करदे बाकी, बकाइदा आपणा रंग रंगाईआ। धरनी कहे मैं जोड़ के दोवें हाथी, बिन सीस सीस निवाईआ। तूं साहिब स्वामी पुरख समराथी, हरि करता धुरदरगाहीआ। होणा सहाई अनाथ अनाथी, दीनां दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। (१७ वसाख श स ६)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

★ भाईए तेजा सिँघ नूं गलवकड़ी पा के शब्द उच्चारया ★

सतिगुर पूरा कदे ना भुल्लदा, भुल्लण विच्च कदे ना आईआ । उह मालक बणे भगतां दी कुल दा, कुल्ल मालक आप अखवाईआ । जो गुरसिख सतिगुरू दे नाम

कंडे तुलदा, तराजू आपणे विच्च रखवाईआ। ओस वास्तो सदा सचखण्ड दवारा खुल्लदा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जिथ्थे इक्को शब्द निशाना झुलदा, सतिगुर शब्द आप वखाईआ। जिथ्थे जाप रहिंदा नहीं रसना बुल्लू दा, मुख दन्द ना कोई वडयाईआ। आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा जोती जोत विच्च घुलदा, घोल करे गुरसिख सतिगुर नूं ढाहीआ। मैं तेरी छाती उत्ते फलदा फुलदा, सचखण्ड जावां चाईं चाईंआ। चुरासी विच्च फेर कदे ना रुल्लदा, जन्म मरन ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखवाईआ ।

सतिगुर साचा जाणी जाणा, जानणहार अखवाईआ। सभ तों पैहलों तैनूं मिलावांगा सिँघ माहणा, माता तेरी दा लेखा अवर रहे ना राईआ। सभ दा इक्को घर होवेगा टिकाणा, दूजा गृह नज़र कोई ना आईआ। सभ दा बख्श दित्ता पीणा खाणा, जिनूं इक्क वार महाराज शेर सिँघ दी सेव कमाईआ। सचखण्ड सिँघासण सुख आसण इक्क सुहाउणा, जिथ्थे बिन दीवे बाती होवे रुशनाईआ । दो मावां नहीं सारयां भैण भरावां नूं लोकमात तरावां, एह मेरी बेपरवाहीआ। छत्ती जुग अगले तैनूं कोई ना कहे निथावां, लोकमात तेरे नाम दी वज्जदी रहे वधाईआ। क्यों तूं सतिगुर प्यार विच्च बाहवां विच्च पाईआं बाहवां, गलवकड़ी पा के गलवकड़ी विच्च रखवाईआ। तेरी सेवां तों बल बल जावां, जिस तन मन मन तन सेव कमाईआ। माण मिलेगा उनूं गरावां, जिस गराँ विच्च जन्म दित्ता तेरी माईआ। सीस तेरे दस्तार उह टिकावां, सीस सतिगुर चरन टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा प्यार जन भगत नाल रक्खे सावां, ऊणता विच्च कदे ना आईआ। (४ कत्तक श सं ६)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

लोहां कहण साड्डा रूप होया लोहा लाखा, लाल काले नाल मिलाईआ। बिना प्रभू तों दिसे कोई ना राखा, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। साड्डा रूप बणना सर्ब भाखा, सृष्टी आपणे विच्च जलाईआ। साड्डी अगनी करे हासा, धूंआं असमानां दए जणाईआ। इक्क इक्क शोहला वेखे तमाशा, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। की खेल करे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। जो भगतां अंदर करे वासा, वसल देवे महिबूब नूर अलाहीआ। जिस दे प्यार विच्च हरिजन खुशी दी पावण रासा, गोपी काहन आत्म परमात्म धार बणाईआ। तिनां दी सुहञ्जणी होवे तिन्न मध्घर दी राता, जो सेवक हो के साची सेव कमाईआ। लोहां कहण जिनूं ने सोड्ड सिर दे उत्ते पाई छाता, छत्तरधारी तिनां नूं देवे माण वडयाईआ। आपे होए पिता माता, आपणी गोद टिकाईआ। सच प्रीती जोड़ के नाता, जगत जहान मेल मिलाईआ। अन्तम सभ दीआं पुच्छे बाता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। तिस साहिब नूं जन भगतो नमो नमो निमस्कार विच्च

टेको माथा, मस्तक ख़ाक रमाईआ। जो सभ दा लहणा देणा देवे हाथो हाथा, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सेवा करदिआं पिच्छेपए कोई ना घाटा, घाटे पिच्छले पूर कराईआ। हरि संगत सवेरे दस वजे प्रेम नाल गुंन के आटा, सवा पंज सेर अंदर लैणा पकाईआ। फेर सतिगुर आपणीं हत्थीं सभ नूं देवे बाटा, खुशीआं नाल खवाईआ। सभ ने घर नूं जाणा करदयां हासा, भज्जणा चाईं चाईंआ। सतिगुर शब्द ज़रूर होवेगा साथा, साचा संगी साचा संग बणाईआ। जे तुसां सतिगुर दा मन्नया आखा, उह वी आख़र तक्क तुहाढ्ढे नाल तोड़ निभाईआ। जीवण विच्च कदे बदले ना पासा, करवट विच्च ना मुख भवाईआ। तुहाढ्ढा मानस जन्म करे रासा, रस्ते विच्च जांद्यां नूं मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। (३ मध्घर श स ६)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

धरनी कहे मैं भगतां करां धन्नवाद, खुशीआं विच्च सीस निवाईआ। भगतो तुसां मेरा खेड़ा करना आबाद, जिथ्थे दीन दुनी मिले वडयाईआ। जिस दा नाम रहे आदि जुगादि, जुग चौकड़ी वज्जे वधाईआ। मेरा असली रूप फेर बणेगा कलिजुग दी धार तों बाद, सतिजुग आपणा रंग प्रगटाईआ। जिस वेले सारी सृष्टी दा होया इक्क रिवाज़, इक्को मार्ग दीन दुनी चले चाईं चाईंआ। इक्को नाम शब्द दी आवे अवाज़, इक्को सरोता होवे धुर दा माहीआ। इक्को शब्द गोबिन्द दा होवे बाज़, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। मैं तुहाढ्ढा शुकर करां जिन्हां ने भगत दवार सुहाया पैहलों विच्च पंजाब, फेर दिल्ली दवार दित्ती वडयाईआ। जिथ्थे साहिब सतिगुर दे शब्द दा होणा राज, रईअत नौ खण्ड पृथ्मी बैठे सीस निवाईआ। जिस दा शाह सुल्तान करनगे काज, करनी दा करता आपणे हुक्म विच्च भवाईआ। तुसीं प्रभू भगतो मेरे वड्डे मैं तुहानूं करां अदाब, धरनी कहे मैं निव निव लागाँ पाईआ। जिन्हां ने मेरा पूरा कीता खवाब, माझा मालवा दुआबा जम्मू आया चाईं चाईंआ। पर याद रक्खयो एथ्थे सारी सृष्टी वास्ते धर्म दी खुल्हेगी किताब, जिस दा मज़मून जगत कनूंन ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक्क वरताईआ। (२० माघ श सं १०)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

अठारां हाढ़ कहे जन भगतो प्रभ चरन करनी सेवा, सेवा सतिगुर विच्च समाईआ। इक्को नाम जपणा जिह्वा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला देणा सुणाईआ। इक्को मस्तक मणीआ लाउँणा थेवा, थिर घर वासी वेख के खुशी बणाईआ। साचा नाम होवे तुहाढ्ढी उत्ते रसना जिह्वा, दिवस रैण ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। (१८ हाढ़ श सं ११ रात नूं)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

सच्चा अनन्द सतिगुर सेवा, सेवा सच सच वडयाईआ। मेहरवान होवे वड देवी देवा, देव आत्मा वेख वखाईआ। किरपा करे जो वसे धाम निहकेवा, अट्टल महल्ल सोभा पाईआ। सच प्यार दा अन्तर लावे थेवा, कौसतक मनीआ रूप बदलाईआ। पवित्र करे रसना जेहवा, स्वास स्वास विच्च समाईआ। नाम पदारथ दे के अगम्मा मेवा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सॅच दी करनी कार कमाईआ। (१५ माघ श सं ११)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

★ दरबार निवासीआं दलीप सिँघ रतन सिँघ प्रीतम सिँघ जरनैल सिँघ सुलक्खण सिँघ जगीर सिँघ दे नवित्त ★

पुरख अकाल सदा निहकेवा, निरगुण निरवैर निरँकार बेपरवाहीआ। आदि जुगादी बोध अगाधी देवी देवा, देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव जिस नूं सीस निवाईआ । आदि अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त अलख अभेवा, अगम्म अथाह वड वडयाईआ। नित्त नवित्त कर कर हित्त जन भगतां अमृत रस देवे मेवा, नाम निधाना श्री भगवाना, झोली पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दर ठांडे लेखे लावे सेवा, कीती घाल आपणे चरनां विच्च टिकाईआ। जिस दी सिफ्त कर सके ना कोई जेहवा, रसना कहण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द सदा सुखदाई, देवे माण वडयाईआ। जो जुग जुग निरगुण सरगुण खेल रिहा खलाई, ख़ालक ख़लक रंग वखाईआ। जन भगत सुहेले उठाए फड़ फड़ बाहीं, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। भेव अभेदा खोल्हे पर्दा अन्तर दए उठाई, निझ नेत्र लोचन नैण करे रुशनाईआ। लेखा जाणे धुर गुसाईं, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। वेखणहारा थाउँ थाईं, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जो भगत सुहेले दर ठांडे करदे वाही, वाहिण चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मेल मिलावा करके भैणां भाई, चरन प्रीती इक्को इक्क इक्क रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रंग आप रंगाईआ।

सतिगुर शब्द कहे सति सति सति मेहरवानी, मेहरवान दया कमाईआ। जन भगतां वेखणहारा जगत जवानी, नव जोवन ध्यान लगाईआ। जो साची सेवा दी करन कुरबानी, करबले तों परे मिले वडयाईआ। धर्म धार रहे निशानी, निशाना जगत जहान झुलाईआ। दर आयां करे परवानी, परम पुरख होए सहाईआ। देवणहारा धुर दा दानी, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा वेख विखाईआ।

सतिगुर शब्द कहे एह खेल अगम्मे हरि दे, हर हिरदा वेख वखाईआ। जो भगत

सुहेले भगत दवार सेवा करदे, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। भय चुकाए धर्म राए दे डर दे, चुरासी फ़ासी रहे ना राईआ। साची मंज़ल जाण चढ़दे, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ । तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला जाण पढ़दे, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा पन्ध मुकाईआ। मालक होवण सचखण्ड दवारे साचे घर दे, गृह मिले माण वडयाईआ। जिथ्थे ना जन्मे ना मरदे, जोत जोत विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग आप रंगाईआ।

सतिगुर शब्द कहे जो भगत दवारे घाले घाल, घोली आपणा आप घुंमाईआ। तिस नूं वेखणहारा दीन दयाल, दयानिध धुरदरगाहीआ। जो बख्शणहारा नाम सच्चा धन माल, खज़ीना अतोट अतुट्ट वरताईआ। हरिजन गुरमुख सन्त सुहेले बणा लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, मेला मेले सहज सुभाईआ। सम्बल बह के करे संभाल, घर साचे होए सहाईआ। लेखा जाणे बिरध बाल जवान, नारी नर इक्को रंग रंगाईआ। पुच्छणहारा मुरीदां हाल, मुशर्द अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे जन भगत सुहेला फलदा, जुग जुग प्रभ दी सेव कमाईआ। उस दा दीपक जोती जोत हो के बलदा, जगत जहान करे रुशनाईआ। माण वेखे आपणे गृह अट्टल दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। लोकमात झगड़ा चुक्के जल थल दा, महीअल आपणा पन्ध मुकाईआ। उह लहणा लेखा लाए आपणी इक्क गल्ल दा, जिस रसना नाल तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तिस लेखा मुकाए कलिजुग कल दा, कलकाती नज़र कोई ना आईआ। वसेरा बख्शे चरन प्रीती निहचल धाम अट्टल दा, सचखण्ड साचा इक्क सुहाईआ। जन भगत सुहेले आपणे प्यार विच्च सचखण्ड दवारिउँ घलदा, फेर सचखण्ड विच्च मिलाईआ। एह फ़ैसला आदि जुगादि अट्टल दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदर आपणा आसण मलदा, मल मूतर दा लेखा दए मुकाईआ।

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★